उलझनों के बीच एक राह

– प्रियंवद

अप्रैल 2020 एक अलग तरह की अनजानी अन्मनस्यकता के साथ जीवन में दाखिल हुआ। किसी को कुछ भी समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। इसी उधेड़बुन में हमने शिक्षक साथियों के साथ संवाद की प्रक्रिया शुरू की जो धीरे–धीरे उनके साथ मिलकर काम करने की प्रक्रिया में बदल गई।

जब लॉकडाउन शुरू हुआ तो स्थितियां बहुत स्पष्ट नहीं थीं। सब कुछ जैसे अचानक से हो गया। दो चार दिन तो कुछ खास समझ में नहीं आया कि ब्लॉक के स्तर पर क्या और कैसे किया जाय? शुरुआत में हम अपने फाउंडेशन के साथियों के साथ ही बातचीत कर रहे थे और अपनी टेली कान्फ्रेसिंग में खुद के क्षमता सम्वर्धन के लिए प्रयासरत रहे। इसी दौरान यह चिंता भी सामने आयी कि पता नहीं यह स्थिति कब तक रहेगी और यदि यह दौर लम्बा चलता है तो हम अपने शिक्षक साथियों से एकदम कट जायेंगे। तो सभी के सुझाव से यह तय किया गया कि हमें रोज ही कुछ शिक्षक साथियों से बातचीत करके हाल–चाल लेना चाहिये। हर रोज ही हम दोनों साथियों द्वारा ब्लॉक के शिक्षक साथियों से बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ। शुरुआत में हमने उन शिक्षक साथियों के साथ बातचीत की जिनसे हम ज्यादा मिलते रहते हैं या जो शिक्षक हमारे कार्यक्रमों में लगातार आते रहते हैं। क्योंकि किनसे बात करें, के सवाल पर पहला नाम उन्हीं शिक्षकों का ही ध्यान में आता है, जिनसे हम लगातार संपर्क में होते हैं। लेकिन दो तीन दिन में ही यह संख्या समाप्त हो गयी तो हमने नये साथियों से भी बातचीत का सिलसिला शुरू किया। शिक्षक साथियों से बातचीत के दौरान हमारा फोकस अभी केवल कनेक्टिविटी बनाये रखने का ही था। इस बातचीत में सामान्य हाल–चाल, घर परिवार के स्वास्थ्य और कोरोना से बचाव आदि पर ही ध्यान रहता था। शुरुआती दिनों में इक्का–दुक्का शिक्षकों को छोड़ दें तो हमारे ब्लॉक के शिक्षकों में इस बीमारी को लेकर कोई खास चिंता नहीं दिखायी दे रही थी। स्कूल नहीं आने और घरों में रहने की बंदिश ने जरूर स्थितियों को सामान्य नहीं रहने दिया था। लेकिन जैसे–जैसे समय बीत रहा था तमाम माध्यमों से इस नयी बीमारी कोरोना के बारे में अनेक जानकारियां सामने आ रही थीं और चिंता बढ़ रही थी। अब यह और भी जरूरी हो गया था कि

फोटोः पुरूषोत्तम ठाकुर

हम शिक्षक साथियों से लगातार संपर्क में रहें लेकिन अभी भी मन में यह शंका बरकरार थी कि हाल–चाल और स्वास्थ्य आदि के बारे में बातचीत के अलावा हम अकादमिक बातचीत करें कि न करें? शिक्षकों को क्षमतावर्धन के काम से जोड़ना मुश्किल लग रहा था।

हमने वाट्सएप पर बाजपुर के शिक्षकों का जो समूह बनाया था उस पर कोई अकादमिक सामग्री भेजने पर भी कोई खास प्रतिक्रिया नहीं आ रही थी। ज्यादातर शिक्षक कोरोना से सम्बंधित विभिन्न तरह के संदेश इस ग्रुप में डाल रहे थे। जिसमें ज्यादातर संदेश बिना दरियाफ्तागी के थे? कई बार उन संदेशों को काउंटर करने की भी कोशिश की गयी। फिर भी कुछ खास परिणाम नहीं निकल रहे थे।

हम जो भी थोड़ा बहुत प्रयास कर पा रहे थे वह व्यक्तिगत स्तर का ही था। इसे समूह में बदलना अभी भी संभव नहीं हो पा रहा था। लेकिन हमने अपने वाट्सएप समूह के अलावा कुछ ऐसे साथियों को जो अकादमिक बातचीत में थोड़ी भी रुचि ले रहे थे उन्हें कुछ सामग्री भेजना जारी रखा। जब पहले दौर का लॉकडाउन समाप्त होने से पहले ही सरकार द्वारा उसकी सीमा बढ़ा दी गयी तब कहीं–कहीं कुछ चटकने की आवाजें सुनायी देने लगीं।

हालांकि अभी भी यह संख्या बहुत ज्यादा नहीं थी फिर भी यह कहा जा सकता है कि कुछ शिक्षकों ने समूह की तरफ बढ़ने की हामी भरी। अभी हम 10 से 12 शिक्षकों का एक ऐसा समूह बनाने में सफल रहे। ऐसे शिक्षकों का समूह जो इस कोरोना काल में भी कुछ अकादमिक या पढ़ने लिखने से सम्बंधित चर्चा में हिस्सेदारी करने को इच्छुक हैं। इसके पहले हमने उन शिक्षक साथियों को जो पहले से ही किसी न किसी विषय में बातचीत को इच्छुक थे उन्हें जिला स्तर पर बने समूह में जोड़ने या जुड़वाने का प्रयास किया। इसके पीछे का कारण यह था कि हम अपने ब्लॉक में दो ही लोग हैं जिसमें डॉ विजय पाण्डेय मुख्यतः विज्ञान विषय से सम्बंधित हैं और मैं हिंदी भाषा से। जबकि कई ऐसे शिक्षक थे जो गणित या अंग्रेजी भाषा में जुड़ना चाहते थे। तो हमने उन्हें सम्बंधित विषयों से जुड़े लोगों के समूह में जोड़ने का अनुरोध किया। अंग्रेजी से सम्बंधित लोगों को राजकुमार भाई के समूह में और गणित से सम्बन्धित लोगों को संजय भाई और मुनेन्द्र भाई वाले समूह में जुड़ने की कोशिश की गयी। इसके अलावा अब हमरे पास 10–12 शिक्षकों का ऐसा समूह बन गया है जो विभिन्न विषयों पर अकादमिक चर्चा के लिए तैयार है।

इन सबके अलावा भी कुछ ऐसी बातें और घटनाएं हुईं जिन्होंने निश्चय ही हमारे इस वक्त के जीवन को प्रभावित किया है। जैसे कि अम्बेडकर जयंती। हम आमतौर पर अम्बेडकर जयंती अपेक्षाकृत ठीक तरीके से मनाते आये हैं. ..इस बार का वर्ष चूंकि गाँधी जयंती के 150वें वर्षगाँठ के तौर पर भी मनाया जा रहा है तो हमने इसी बहाने गाँधी और अम्बेडकर के विचारों पर सम्मिलित विचार गोष्ठी का आयोजन करना सोचा था। जिसे लेकर मन में कुछ इस तरह की बातें थीं–

सम्यक आलोचना या कुछ और?

जब आप थोड़ा ज्यादा उमंग में और थोड़ी कच्ची नींव वाले होते हो तो वह किसी से भी भिड़ जाने का सबसे शानदार शौक होता है। जिसे अपना नायक मानते हैं उसे बकरियों से भिड़ा कर विजेता होने का दम्भ आपको गहरी संतुष्टि देता है। हम कहते थे– पटरा कर दिया। मतलब अम्बेडकर को गांधी से भिड़ाया और गांधी को पटक दिया। जाहिर है उसके लिए कुछ गिने–चुने उद्धरण लिए और खेल करने के बाद अट्टहास कर लिया। इस खेल को खूब खेला है, इसलिए पहचानता हूं। लेकिन सवाल उठता है – इससे मिला क्या? यह ये भी भले वो भी भले का मामला नहीं है। दो बिंदु समझने चाहिए।

1– इतिहास का कोई भी नायक, दुहरा रहा हूं, कोई भी नायक वर्तमान को पूरी तरह से एड्रेस नहीं कर सकता। देशकाल और परिस्थितियां बदलती हैं तो जरूरतें बदल जाती हैं। मार्कससिस्ट भाषा में इसे 'ठोस परिस्थितियों का ठोस आकलन' कहते हैं। इनके हिसाब से ही चीजों को व्याख्यायित किया जाना चाहिए और रणनीतियां बननी चाहिए। जिस दौर में गांधी और अम्बेडकर सक्रिय थे उस दौर में और आज में बहुत फर्क है। तब एक औपनिवेशिक शासन था। तब दक्षिणपंथ इस कदर प्रभावी नहीं था। तब जाति का प्रश्न उत्तर भारत में उठना शुरू ही हुआ था। इसलिए यहां छुआछूत विरोध भी उस दौर आगे बढ़ा हुआ कदम था। आज ऐसा नहीं है। आज गाँधी, मार्क्स और अम्बेडकर को एक पाले में लाने की जरूरत इसलिए है कि दक्षिणपंथ दलित, अल्पसंख्यक और कामगार, तीनों के खिलाफ खड़ा है। गांधी के दौर में छुआछूत हटाना एक साहसिक कदम था। आज नहीं है। अम्बेडकर के समय में एक अलग मुस्लिम देश का निर्माण ज्वलंत प्रश्न था, आज नहीं है। मार्क्स जहां सक्रिय थे वहां साम्प्रदायिकता और जाति के सवाल नहीं थे, यहां हैं।

2– इस एक पाले में लाने का मतलब यह नहीं कि हम अंतर्विरोधों पर पर्दा डाल दें। हमें ताकत के साथ कहना पड़ेगा कि गांधी साम्प्रदायिकता के सवाल पर स्पष्ट हैं लेकिन जाति के सवाल पर उन्मूलन तक नहीं पहुंचते और मजदूरों के सवाल पर मालिक का दिल जीतने तथा ट्रस्टीशिप जैसे सिद्धांत तक ही पहुंचते हैं। कहना होगा कि अम्बेडकर दलित प्रश्न पर क्रिस्टल क्लियर हैं, जाति उन्मूलन का सवाल पहली बार उठाते हैं, स्त्री मुक्ति का प्रस्ताव देते हैं लेकिन साम्प्रदायिकता के सवाल पर उनका स्टैंड सही नहीं है और कामगारों को लेकर वह साफ नहीं हैं जबकि पूंजीवाद का स्पष्ट विरोध है उनके यहां। कहना होगा कि मार्क्स के यहां आपको जाति या साम्प्रदायिकता का सवाल नहीं मिल सकता।

यह आलोचना किसी बुराई के लिए नहीं न ही किसी लड़ाई में कमतर या मजबूत साबित करने के लिए। यह आलोचना इसलिए कि यहां तक का रास्ता उन्होंने दिखाया इसके आगे का रास्ता हमें खुद तलाशना होगा। ऐसे नायकों में से किसी ने धर्मग्रंथ नहीं लिखे कि जिसमें संशोधन न सम्भव हो। इनकी अंधभक्ति हमें उनका खराब